आपके पत्र

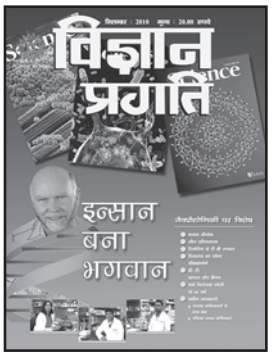

भारतीय विज्ञान का अनमोल हीरा

मैं एक निजी विद्यालय में अध्यापक हूँ तथा पिछले 1 वर्ष से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। मैंने विज्ञान प्रगति सर्वप्रथम 3 वर्ष पहले एक बुक स्टॉल से खरीदकर पढ़ी थी। तबसे हमेशा भारतीय विज्ञान के इस अनमोल हीरे को पाने का इच्छुक रहा हूँ। विज्ञान प्रगति का सितम्बर 2010 का अंक प्राप्त होते ही मन पुलकित हो गया। आमुख कथा 'इन्सान बना भगवान', 'कोहराम मचाता बादल आखिर फट ही गया', 'सवाल जब जब जवाब तब तब' तथा 'विज्ञान समाचार' लेख काफी रोचक लगे। विशेष लेख 'मानव जीनोम के दस वर्ष' ज्ञानवर्द्धक था। विज्ञान प्रगति के लेखक शुकदेव प्रसाद जी, देवकी नंदन, अरविन्द मिश्र एवं अभिषेक मिश्र जी सहित सभी विज्ञान लेखकों को वैज्ञानिक जानकारी देने के लिए कोटि कोटि धन्यवाद! मैं अपने विद्यार्थियों को भी विज्ञान प्रगति पढ़ने के लिए प्रेरित करता हूँ। आखिर में मैं विज्ञान प्रगति की सम्पूर्ण टीम का हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। आशा है विज्ञान प्रगति के आने वाले अंक अधिक रोचक व ज्ञानवर्द्धक होंगे।

श्री गणपत लाल पंवार, सुपुत्र श्री भंवर लाल सीरवी, बेरा ग्राम सेवक जी का चण्डावल नगर, जिला - पाली - 306 306 (राज.) [मो. : 9784838643, 9460031787]

वैज्ञानिक रस गगरी

भरकर वैज्ञानिक रस गगरी ले आती है विज्ञान प्रगति।
आते ही घर के टेबल पर छा जाती है विज्ञान प्रगति।।
नन्हा मुन्ना बच्चा विज्ञान प्रगति के चित्रों में खो जाता है।
मेरी मम्मी को हास्य और पापा को लेख मन भाता है।।
मैं तो पूरी पत्रिका पलटकर पढ़ता हूँ, हर्षाता हूँ।
जितना पढ़ता हूँ, उतना ही विज्ञान ज्ञान पा जाता हूँ।।
हर माह नई रोचक बातें बतलाती है विज्ञान प्रगति।
भरकर वैज्ञानिक रस गगरी ले आती है विज्ञान प्रगति।।

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। मेरे घर में साहित्य और विज्ञान की ढेरों पत्रिकाएं आती हैं, किन्तु विज्ञान वर्ग का विद्यार्थी होने के कारण हमें विज्ञान प्रगति सर्वाधिक प्रभावित करती है। यद्यपि यह पूरी पत्रिका अनूठी और निराली है किन्तु विज्ञान क्विज़ और विभिन्न बिंदुओं पर प्रकाशित लेख अत्यंत आकर्षक तथा ज्ञानवर्द्धक होते हैं। मैं विज्ञान प्रगति के हर अंक से आकर्षक तथ्य और विज्ञान क्विज़ को अपनी डायरी में संकलित करता हूँ। आशा करता हूँ कि विज्ञान प्रगति इसी प्रकार हमें सदैव प्राप्त होती रहेगी और ज्ञानवर्द्धन करती रहेगी।

श्री अरुण कुमार द्विवेदी, सांई किसान इंटर कॉलेज जोहन, मोती गंज, फैज़ाबाद - 224 209 (उ.प्र.)
[मो. : 09838656748]

रोचक अंक

विज्ञान प्रगति का जैवप्रौद्योगिकी पर विशेष सितम्बर 2010 का अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका पढ़कर अनेक ज्ञानवर्द्धक व रोचक जानकारियां प्राप्त हुईं। पिछले दिनों कॉलम के अंतर्गत 'कोहराम मचाता बादल आखिर फट ही गया', 'हिमालय का सोना सीबकथोर्न' और विशेष लेख 'बी. टी.: कपास और बैंगन' लेख मुझे काफी पसंद आए। बादल फटने की प्रक्रिया और विभिन्न प्रकार के बादलों के विषय में इस अंक में पूरी जानकारी दी गई थी। बादल फटने के कारण हमारे देश में काफी नुकसान होता है। सीबकथोर्न के विषय में मैंने पहली बार विज्ञान प्रगति के इस अंक के माध्यम से ही जाना। सीबकथोर्न वाकई में गुणों का खजाना है। सीबकथोर्न के सभी लाभकारी गुणों की विस्तृत जानकारी पढ़कर मुझे काफी अच्छा लगा। जी. एम. फसलों के बारे में इस अंक में विस्तार से दिया गया है। बी.टी. कपास और बैंगन के बारे में भी पूरी जानकारी मिली। इस अंक में 'सवाल जब जब जवाब तब तब', 'हंसते जाओ पेट घटाओ', 'विज्ञान समाचार' के साथ-साथ चिकित्सा विज्ञान की आधुनिकतम खोजें भी काफी पसंद आई।

श्री महेन्द्र प्रताप सिंह, ग्राम.-मेहरागॉव, जिला - अल्मोड़ा - 263 623 (उत्तरांचल) [मो. : 0941618899]

सर्वश्रेष्ठ पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। विज्ञान प्रगति का सितम्बर 2010 का जैवप्रौद्योगिकी पर विशेष यह अंक अत्यंत ज्ञानवर्द्धक एवं सराहनीय लगा। इस अंक के विशेष लेख बी.टी.: कपास और बैंगन से मुझे अति महत्वपूर्ण जानकारी मिली। इस लेख के माध्यम से लेखक ने सामयिक व सारगर्भित जानकारी के साथ-साथ सकारात्मक सुझाव भी दिए हैं। उल्लेखनीय है कि आजादी के समय भारत की जनसंख्या 35 करोड़ थी, जो अब बढ़कर 1.18 अरब हो गयी है। एक अनुमान के अनुसार 2030 में भारत विश्व में सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश हो जायेगा। ऐसी स्थिति में प्रश्न यह है कि इतनी अधिक जनसंख्या के लिए खाद्य सामग्री कहां से आयेगी। जबकि देश में 80% सीमान्त कृषक हैं, जिनकी जोत 1.00 हे. से भी कम है। स्पष्ट रूप से आसन्न ऐसी विषम परिस्थिति से निपटने के लिए दूसरी हरित क्रान्ति के लिए 'जेनेटिक इंजीनियरिंग ही एक ऐसी विद्या है जिसके प्रयोग से जी एम फसलों को कृषि उत्पादन में सम्मिलित करके ही कम क्षेत्रफल में अधिक पैदावार ली जा सकती है, जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति में अपेक्षित सुधार

महाविभूतियों का साक्षात्कार

हर बार की तरह विज्ञान प्रगति का अगस्त 2010 अंक भी रोचक, रोमांचक व ज्ञानवर्द्धक लगा। इस अंक का प्रत्येक लेख अपने आप में एक पूर्णता लिए हुए था। संपादकीय 'महान व्यक्तित्व महान कार्य' हमें भी हमारे कार्य करने की प्रेरणा दे गया। महान वैज्ञानिक प्रफुल्लचन्द्र राय ने भारत के प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन कर दुनिया को बतलाया कि भारत रसायन व आर्युवेद में कितना आगे है। बस जरूरत है तो सिर्फ भारत के इतिहास को खंगालने व पलटने की। कुछ ऐसा ही प्रयास हाल के दिनों में टी के डी एल (ट्रेडिशनल नॉलेज डिजिटल लाइब्रेरी) द्वारा किया गया, जिससे भारत के कई पेटेंट विदेशियों के हाथ लगने से बच गए। प्रो. एम. एस. स्वामीनाथम जितने बड़े वैज्ञानिक हैं उतने ही विनम्र इन्सान भी। तभी तो उनके अधीनस्थ कर्मचारी उन्हें अपना भगवान मानने लगे थे। हरित क्रांति उनकी ही देन है और आज हम खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर हैं व हमारी अर्थव्यवस्था नई ऊंचाईयों को छू रही है। मृदा विज्ञानी डॉ. नील रत्न धर मानवता के लिए एक मिशाल थे, जिन्होंने अपनी जिंदगी की पूरी कमाई शिक्षण संस्थानों को दान में दे दी व खुद को मानव मात्र की सेवा में समर्पित कर दिया।

लेज़र जिसे कभी डेथ रे कहा गया था, आज चिकित्सा जगत का एक महत्वपूर्ण औजार बन गया है। सर्जरी, कैंसर, स्टोन्स, दंत रोग व आंखों के उपचार में लेजर मील का पत्थर साबित हुई है। इसके अलावा भी दैनिक उपयोग में लेजर काफी उपयोगी साबित हो रहा है। साइबर क्राइम व साइबर वार के खतरों को कमतर आंकना बड़ी भूल साबित हो सकती है। हमें हमेशा चौकस व सजग रहना होगा। दिल्ली में घटित कोबाल्ट-60 विकिरण की घटना से काफी दुख पहुंचा। कम से कम देश के नामी शिक्षण संस्थान से ऐसी बड़ी भूल की उम्मीद कतई नहीं थी। उम्मीद है इस घटना से सभी ने अवश्य सबक लिया होगा। जिंकगो बाइलोबा पर दी गई सामग्री सारगर्भित लगी। यद्यपि इस पादप पर और ज्यादा शोध की आवश्यकता है। जलीय खेती आज की जरूरत है और भारत में इसकी अच्छी संभावनाएं भी हैं। खाद्यान्न की आत्मनिर्भरता व पौष्टिकता की दिशा में जलीय खेती एक क्रांति की तरह है जो भारत की अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय भूमिका निभाएगी। बाकी अन्य सभी लेख व स्तंभ भी उत्कृष्ट व आकर्षक लगे। विज्ञान प्रगति हमें ऐसे ही महाविभूतियों से साक्षात्कार कराती रहे व हमें भी कुछ नया करने को प्रेरित करती रहे। धन्यवाद व शुभकामनाओं सहित।

श्री नीतीश कुमार निशांत, सुपुत्र श्री विजय कुमार सिन्हा, छात्र बी पी टी, फैकल्टी ऑफ एलाइड हेल्थ साइंस, जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय, दिल्ली - 110 062
[ई-मेल : : nitishnishant01@gmail.com]

लाकर गरीबी दूर की जा सकती हैं। मैं मानता हूँ कि जी एम फसलों के उत्पादन से वातावरण में कुछ दोष एवं कुप्रभाव उत्पन्न होते हैं, जिनको दूर करने के लिये सार्थक वैज्ञानिक प्रयास करने चाहिये। राजनैतिक रूप से द्रष्प्रचार करके पैदावार बढ़ाने की इस नयी तकनीकी को बंद करना कृषि के लिए एक घातक कदम होगा, ऐसा मेरा मानना है। जी एम फसलों के नकारात्मक पहलू के साथ-साथ उसके सकारात्मक पहलू को भी ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

श्री वीरेन्द्र प्रसाद द्विवेदी, बी. 2/32 जी, भदैनी, वाराणसी (उ.प्र.) [मो. : 09415811642]

सर्वगुण सम्पन्न पत्रिका

बंजर पर बरसात हुई है, कुछ तो बात हुई है। अपना सब कुछ भूल जाता हूँ मैं जब हाथों में विज्ञान प्रगति नामक 'सर्वगुण सम्पन्न पत्रिका' होती है।

मैं विज्ञान प्रगति का नया पाठक हूँ। जैवप्रौद्योगिकी पर विशेष सितम्बर 2010 का अंक काफी ज्ञानवर्द्धक लगा। आमुख कथा 'इंसान बना भगवान' से जीवन के कई सूत्र स्पष्ट हुए। सवाल जब जब, जवाब तब तब के लिए श्री देवकीनंदन जी को धन्यवाद देता हूँ। इस पत्रिका से जुड़े सभी व्यक्तियों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ। वैसे तो मुझे बहुत अफसोस है कि मैं विज्ञान प्रगति के पहले अंकों को क्यों नहीं पढ़ पाया? पर अब बहुत खुश हूं क्योंकि अंततः मेरी इस ज्ञानवर्द्धक पत्रिका से मुलाकात हो गई है, और मैं इस का नियमित पाठक बन गया हूँ। इस अंक में प्रकाशित मानव जीनोम के दस वर्ष, विज्ञान गल्प नई सुबह, कोहराम मचाता बादल आखिर फट ही गया, गर्भनिरोधक गोली के 50 वर्ष, बी.टी : कपास और बैंगन सभी बहुत अच्छे लगे। मैं आशा करता हूँ कि विज्ञान प्रगति सारे रिकॉर्डों को तोड़ते हुए लगातार नई-नई ऊंचाईयों को छूती रहेगी।

श्री शुभम राज, सुपुत्र श्री शुम्भु शरण श्रीवास्तव, नई बस्ती, महादेवा रोड, सिवान - 841 506 (बिहार) [मो. : 09931953148, 09708121758]

विज्ञान की महान विभूतियां याद आयेंगी

विज्ञान प्रगति का अगस्त 2010 का महाविभूतियों पर विशेषांक वर्णनीय लगा। महान कार्य करने वाले व्यक्तित्व संसार में विरले ही होते हैं। प्रत्येक बुद्धिजीवी जो अपने विषय में मास्टर माइन्ड होता है वह शनैः शनैः अनुसंधान करते-करते महानविभूति बन जाता है। इसी क्रम में 'प्रफुल्लचन्द्र राय, डॉ नील रत्न धर तथा प्रो. एम. एस. स्वामीनाथन की विशिष्टताओं पर' विज्ञान प्रगति ने महत्वपूर्ण ढंग से उनके व्यक्तित्व को खूब निखारा है। इस प्रशंसनीय कार्य के लिए पत्रिका के संपादन मण्डल को कोटिश साधुवाद। प्रफुल्लचन्द्र राय ने अपनी मेहनत, लगन और गरीबी को झेलते हुए रसायन शास्त्र में कार्य करके संसार में भारत का नाम रोशन किया। इसी लेख में उनके सरल जीवन, स्वध्याय में निपुणता, देश सेवा की भावना, आध्यत्मिकता का श्रेय, स्वदेशी विकास, क्षेत्रीय भाषा की उन्नति और सफल शिक्षक के रूप ने सभी

भारतीयों का सिर गर्व से ऊंचा किया है। आज भी विज्ञान की दुनिया में उनका नाम अमर है। डॉ. नील रत्न धर मृदा विज्ञानी वाला आलेख भी प्रेरणादायक लगा। इनका जीवनवृत्त, शिक्षा, विदेश में अध्ययन, व्यक्तित्व और इनके द्वारा किये गये अनुसंधानों से बहुत महत्वपूर्ण जानकारी मिली। प्रोफेसर एम एस स्वामिनाथन् वाला लेख भी ओजस्वी लगा। हरित क्रांति के स्वप्नदृष्टा का जीवन परिचय, देश विदेश की शिक्षा, कृषि विषय में विशेष प्रकार के इनके अनुसंधान ने पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन किया। लेज़र के 50 वर्ष लेख भी पठनीय एवं ज्ञानवर्द्धक लगा। साधारण व्यक्ति को लेज़र विज्ञान की जानकारी मिलने से खुशी मिलती है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामना एवं कोटिश बधाई।

डॉ. जसवन्त सिंह जनमेजय, द्वारा अखिल भारतीय स्वतंत्र पत्रकार महासंघ (रजि.), 29-ए डी.डी.ए फ्लैट्स, फेज़ -2 कटवारिया सराय, नई दिल्ली - 110 016

ज्ञान की समुद्ररूपी पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। मुझे विज्ञान प्रगति का प्रत्येक अंक रोचक लगता है। इसके अन्दर छपे लेख काफी अनुभवी लोगों द्वारा लिखे होते हैं जो युवा वैज्ञानिक बनने की सोच पैदा करते हैं। हमारा देश तो प्राचीन काल से ही विज्ञान क्षेत्र में अव्वल रहा है। जब हम साधन सम्पन्न नहीं थे तब भी महान वैज्ञानिक आर्यभट्ट केवल फोफी से आकाशगंगा को देखते थे और उन्होंने ही बताया था कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है और उन्होंने ही जीरो का आविष्कार किया। आज जीरो का प्रयोग विश्व के हर देश में हो रहा है। मुझे अपने देश के विज्ञान के ऊपर फक्र है। जिस प्रकार समुद्र के अन्दर भिन्न-भिन्न प्रकार के जलीय जन्तु और रत्न छिपे हुए होते हैं उसी प्रकार विज्ञान प्रगति पत्रिका के आगोश में भिन्न-भिन्न प्रकार का ज्ञान छिपा होता है। हमारी तरफ से विज्ञान प्रगति को बधाईयां तथा विज्ञान प्रगति निरंतर नये कीर्तिमान स्थापित करती रहे यही मेरी अभिलाषा है।

श्री कल्याण कुमार भट्ट, सुगर मिल चौराहा, खलीलाबाद, जनपद- संत कबीर नगर (उ.प्र.) [मो : 09336063256]

अनमोल मोती

मैं विज्ञान प्रगति का पिछले दो वर्षों से नियमित पाठक हूँ। मुझे यह पत्रिका बहुत अच्छी लगती है। मैं इस अनमोल मोती के समान पत्रिका को अपने दोस्तों को भी पढ़ने को देता हूँ। इससे हमें रोचक जानकारियां मिलती हैं। मुझे हर माह आने वाली विज्ञान प्रगति का बेसब्री से इंतजार रहता हैं। जैवविविधता पर विशेष विज्ञान प्रगति के सितम्बर 2010 अंक में प्रकाशित 'इन्सान बना भगवान' लेख मुझे बहुत अच्छा लगा। एस के द्विवेदी का लेख 'हिमालय का सोना सीबकथोर्न' से हमें विशेष जानकारी मिली। वैज्ञानिक अट्टहास हँसते जाओ पेट घटाओ पढ़कर वास्तव में बहुत अच्छा लगता है। विज्ञान समाचार से भी हमें बहुत महत्वपूर्ण व रोचक जानकारियां मिलती हैं। सीएसआईआर समाचार में रिसोरिन से टी. बी. उपचार लेख बहुत ज्ञानवर्द्धक लगा। गर्भ निरोधक गोली के 50 वर्ष

पढ़कर महत्वपूर्ण जानकारी मिली। विशेष लेख जीन प्रतिस्थापन : एक क्रांतिकारी प्रयोग ज्ञानवर्द्धक लगा। इस महत्वपूर्ण अंक के लिए विज्ञान प्रगति को हमारी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

श्री रवि कुमार, सुपुत्र श्री ललन प्रसाद, ग्रा. व पोस्ट - मानपुर, दिघवारा, जिला - सारण - 841 207 (बिहार) [मो. : 07654913802]

ज्ञान का भंडार

मैं अपने विद्यार्थी जीवन से ही विज्ञान प्रगति की नियमित पाठिका हूँ। मैं व्याख्याता (जीव विज्ञान) के पद पर आ पहुंची परन्तु विज्ञान प्रगति के प्रति मेरा लगाव ज्यों का त्यों बना हुआ है। विज्ञान प्रगति हर वर्ग व उम्र के पाठकों के लिए 'ज्ञान का भंडार' है। विज्ञान प्रगति का जुलाई 2010 का अंक जैवविविधता पर केन्द्रित था। इसमें प्रकाशित लेख व चित्र अत्यंत प्रभावी व आकर्षक थे, जो कि लेखकों और विज्ञान प्रगति के सम्पादक मंडल के परिश्रम को प्रदर्शित करते हैं। इस जानदार व शानदार कोशिश के लिए बधाई। इसी अंक में लुप्तप्रायः प्राणियों का लेखा-जोखा रखने में 'उपग्रहों की भूमिका तथा सर्प मनुष्य का दोस्त' लेख रोमांचकारी जानकारी दे गए। हमारे स्कूल में विज्ञान प्रगति को कितना सम्मान दिया जाता है इसका एक उदाहरण प्रेषित कर रही हूँ। गत दिनों हमारे स्कूल में विज्ञान क्लब का गठन किया गया जिसमें कुछ विज्ञान प्रतिनिधियों का चयन किया गया। इस संबंध में आयोजित सादे समारोह में सभी पदाधिकारियों ने विज्ञान प्रगति पत्रिका पर ही हाथ रखकर विज्ञान के सदुपयोग सहित अपनी जिम्मेदारियों को निष्ठापूर्वक निभाने की शपथ ली। शाला की प्राचार्या के मार्गदर्शन और विज्ञान प्रगति के लेख का अनुशरण कर ब्लॉक स्तरीय साइंस सेमीनार में हमारी छात्राओं ने सर्वश्रेष्ठ होने का पुरस्कार प्राप्त किया। इसका पूरा श्रेय विज्ञान प्रगति को दिया गया।

गांव की झोपड़ी हो या शहर की गगन छूती इमारतें,
विज्ञान प्रगति लिखती है सबकी उन्नति की इबारतें।

श्रीमती रत्ना मिश्रा, व्याख्याता, पं. गिरिजाशंकर मिश्र शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला रायपुर (छत्तीसगढ़) [मो. : 09425511178]

उत्कृष्ट पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। इतनी उत्कृष्ट पत्रिका निकालने के लिए विज्ञान प्रगति टीम को धन्यवाद। जिनके कुशल कार्य, कड़ी मेहनत व लगन का नतीजा है कि विज्ञान प्रगति ने आज देश के कोन-कोने में सभी वर्गों के बीच अपना सम्मानित स्थान बना लिया है। विज्ञान प्रगति ऐसी पत्रिका है जो खासकर विद्यार्थियों के जीवन के हर अंधियारे मोड़ पर तेज रोशनी देने का काम करती है। जो विद्यार्थी विज्ञान प्रगति से अनभिज्ञ हैं वे आज ही यानि इसी वक्त, इसी क्षण परिचित हो जाएं तथा इसका भरपूर उपयोग कर विश्व इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में दर्ज करवायें।

श्री विपिन कुशाग्र अग्निहोत्री, सुपुत्र श्री जय जय राम साह, ग्राम व पोस्ट - नावकोठी, जिला - बेगूसराय - 851 130 (बिहार) [मो. : 09473233216; 09473233217; ई-मेल : bipinkushagra@yahoo.com]

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सी.एस.आई.आर.), डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110012 के लिए श्रीमती दीक्षा बिष्ट द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा बृजबासी आर्ट प्रेस लिमिटेड, ई-46/11, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेस-2, नयी दिल्ली-110 020 एवं इकाई ए-80-81, सेक्टर-5, नोएडा द्वारा मुद्रित।